



डायमण्ड
कॉमिक्स

D. 81Rs. 15.00

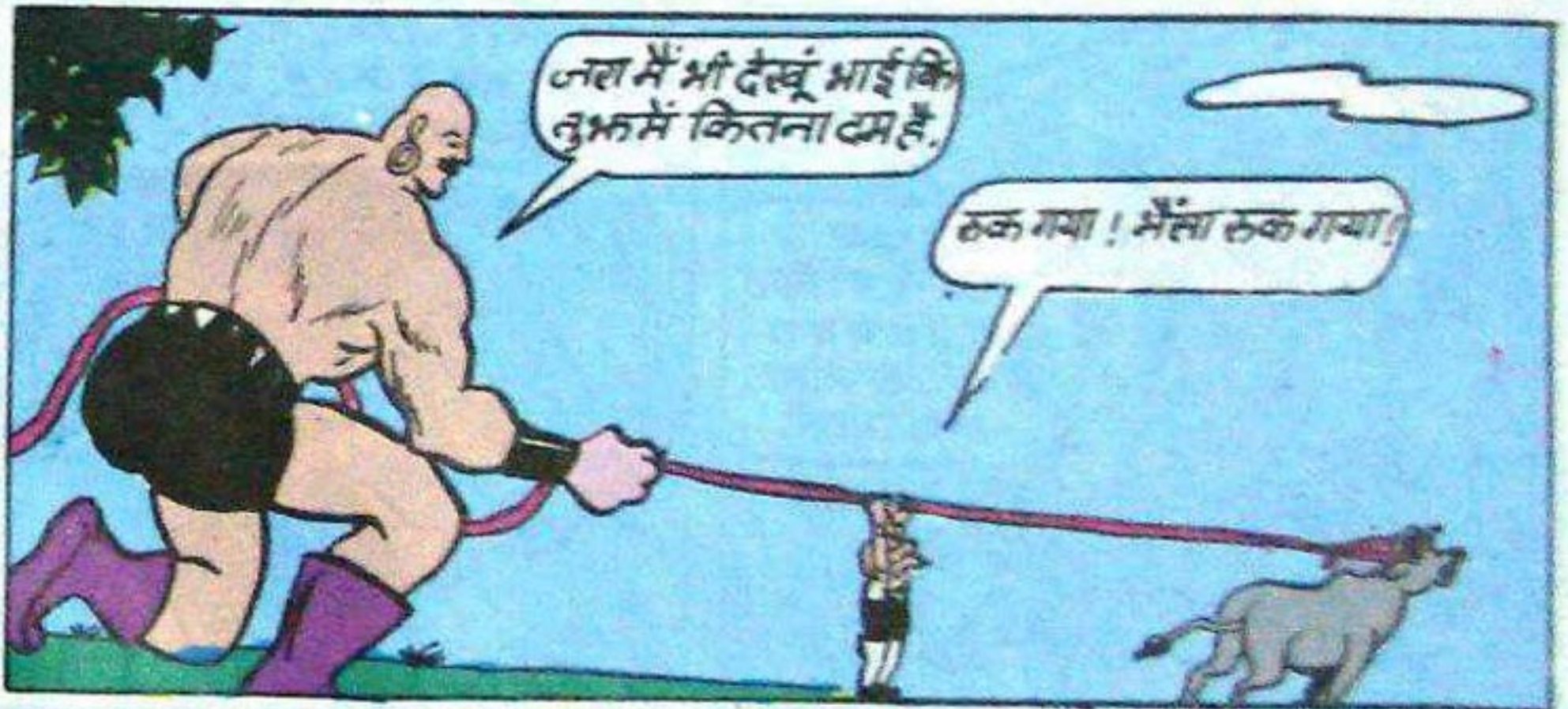
पाठ चाचा चौधरी

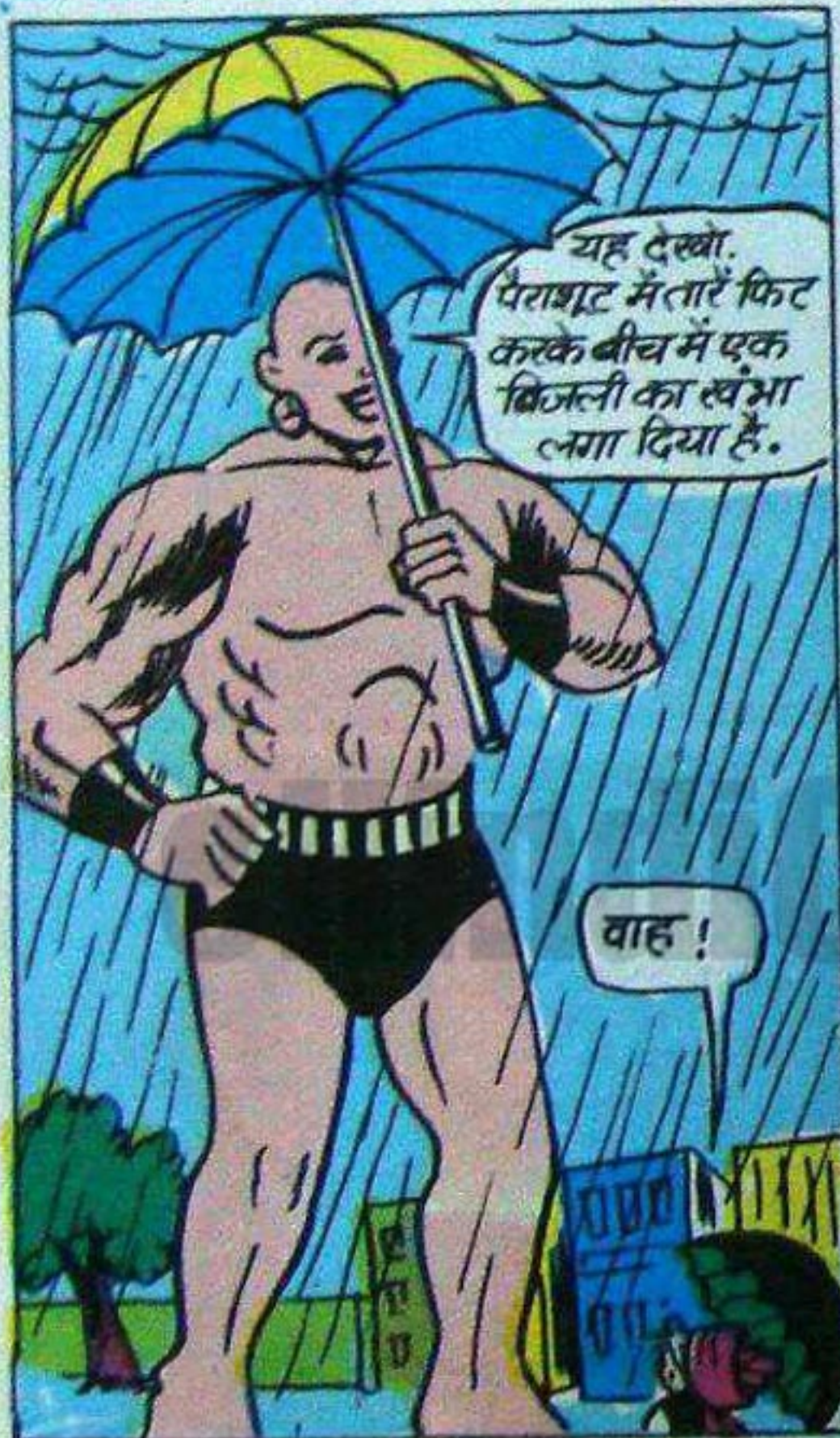
और
शिकारी लकड़बंद्या सिंह





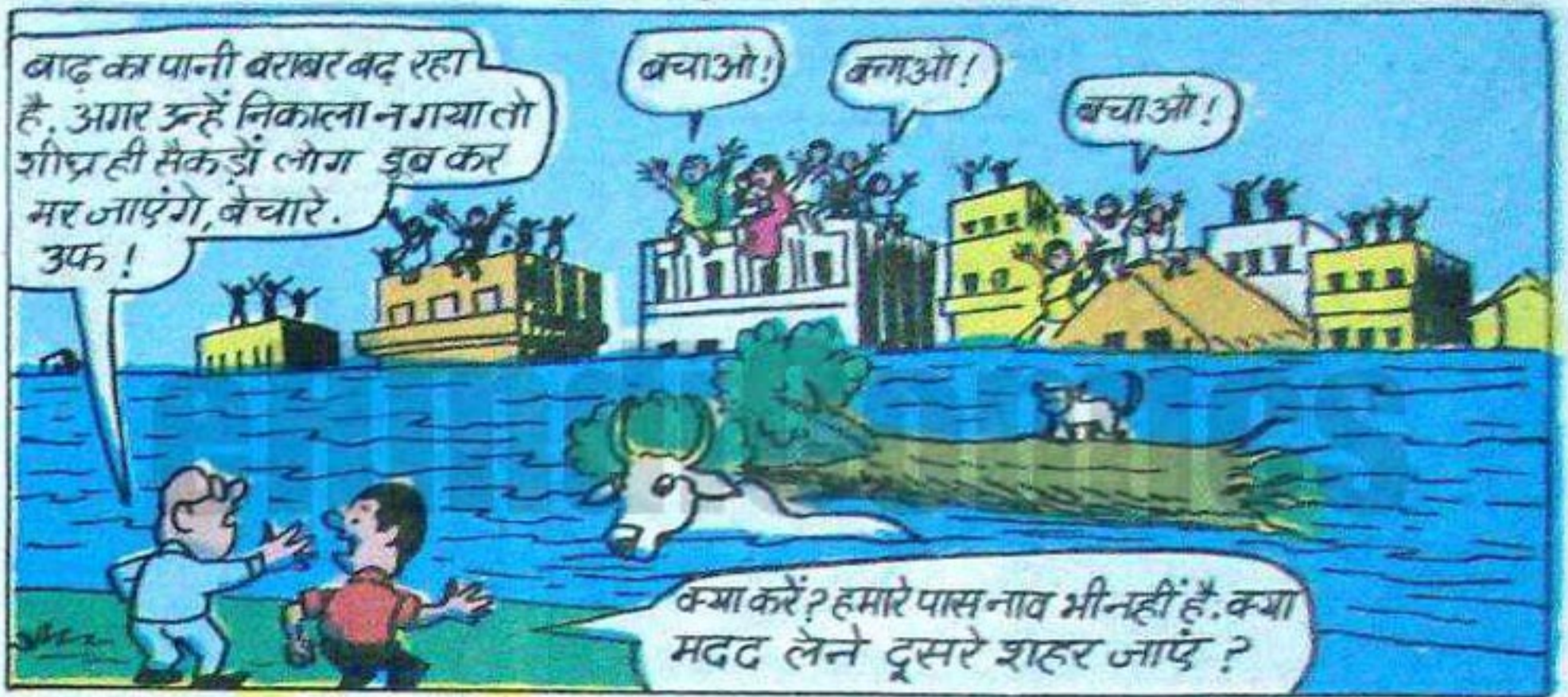






मैं तो समझता था कि तू शरीर से ही लंबा-चौड़ा है, अकल कम है. परंतु अब तो तुझ में अकल भी आती जा रही है.





जय बजरंग बली !



आप सब लोग
जल्दी से मेरी पीठ
पर बैठ जाओ .



सब आ गए ? कोई
रह तो नहीं गया ?

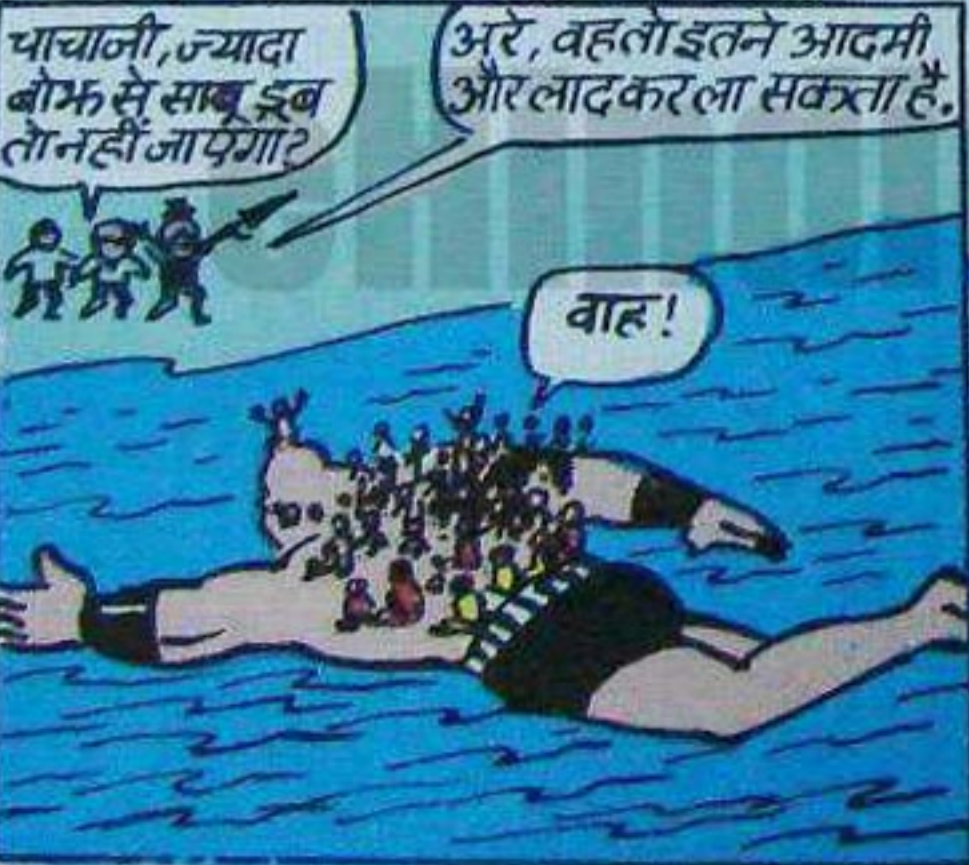
नहीं ! सब आ गए,
अब तुम चलो .



पापाजी, ज्यादा
बोझ से साबू डूब
तो नहीं जायेगा ?

अरे, वह तो इतने आदमी
और लादकर ला सकता है.

वाह !

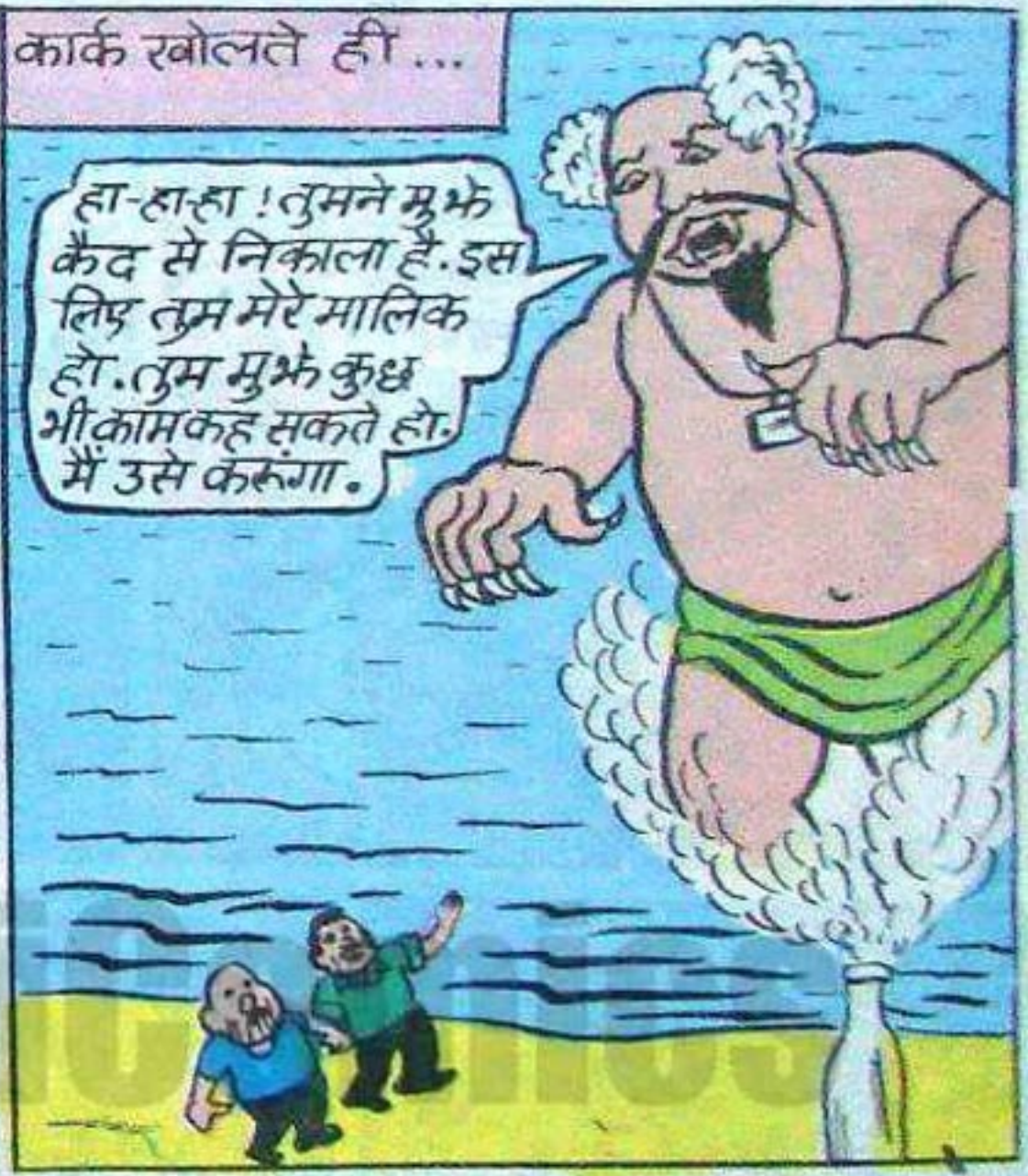


देखा, मेरा जहाज
तुम्हारे सारे आदमी
किनारे पर सुरक्षित
ले आया .

धन्यवाद !



दानव से टक्कर





तुम्हारा भी साबू से झगड़ा है क्या ?

हां. साबू भलाई का प्रतिनिधित्व करता है, मैं बुराई का. भलाई और बुराई में हमेशा लड़ाई चलती रहती है.

आज उसे दूँ कर मैं हमेशा के लिए खत्म कर दूँगा.

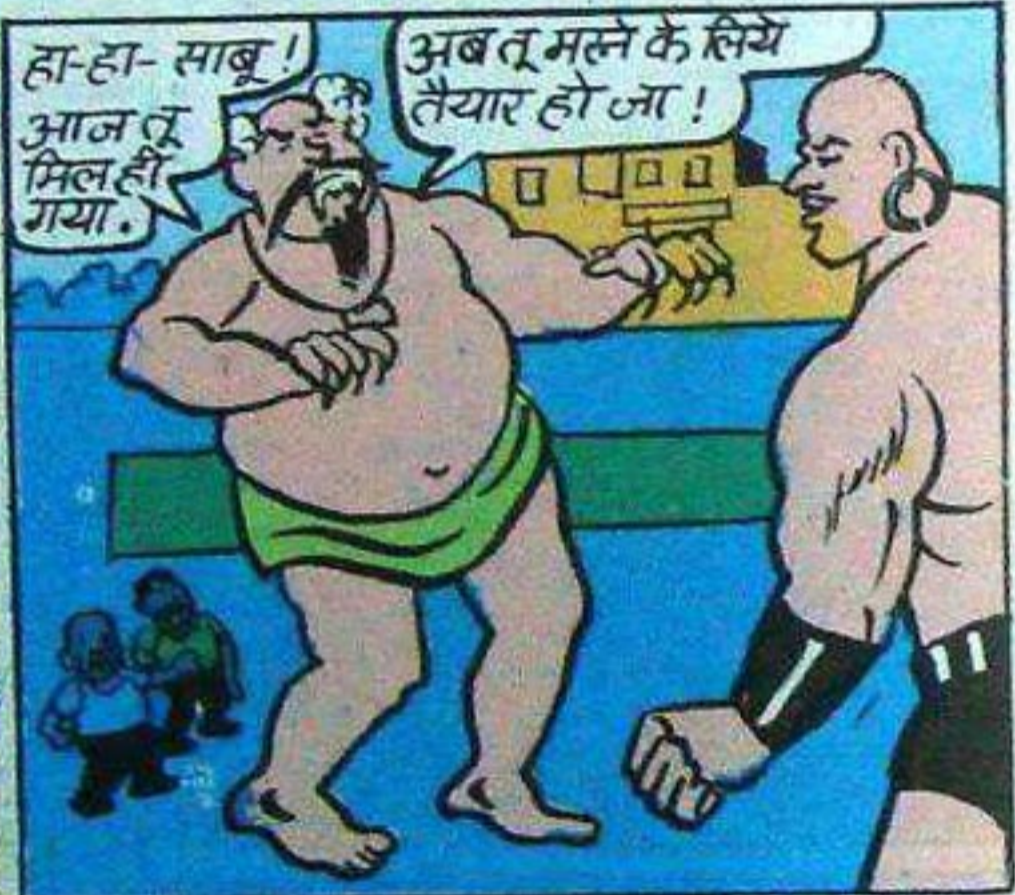


पाचा चौधरी के घर की तरफ इसे ले चलते हैं. साबू वही मिलेगा.



उधर चाचा चौधरी दीपू को तीर चलाना सिखा रहा है.

शाबाश! कमान को खींचो और निशाना साधो.



हा-हा- साबू! आज तू मिल ही गया.

अब तू मरने के लिये तैयार हो जा !



साबू कुछ संभले कि घूसा उसके मुँह पर पड़ा.



साबू तुरंत पैतरा बदलता है और विरोधी को जकड़ लेता है.

कहो, गर्दन मरोड़ दूँ अब ?



रहम, साबू ! वायदा करता हूँ कि आगे से तुम्हारे साथ नहीं लड़ूँगा.

अच्छी बात है. इस बार तुम्हें धोड़ देता हूँ.



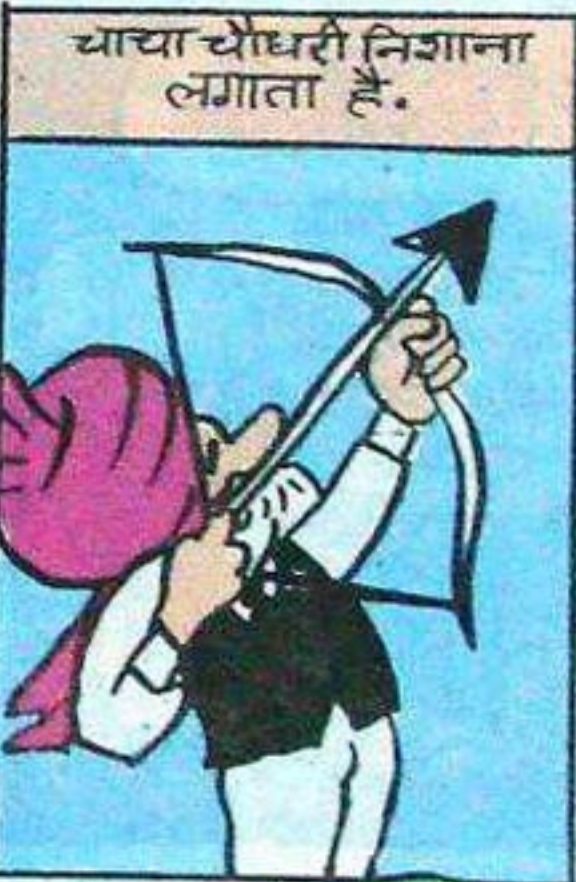
बेवकूफ, मुझे धोड़कर तुने मुसीबत मोलली है. अब मैं अपनी दैवी शक्ति से तुम्हें खत्म कर दूंगा.



दैवी शक्ति के प्रभाव से साबू के सारे शरीर में भीषण पीड़ा होने लगती है.



हं! दैवी शक्ति का उद्गम उसके गले में लटका तावीज है. दौपू जरा तीर कमान देना.



चाचा चौधरी निशाना लगाता है.



ओह! तीर ने मेरा तावीज काट दिया.



अब हम दोनो बरा-बरी के धरातल पर खड़े हैं.

मैं तुम्हें अब भी कुचल सकरता हूं. मरने के लिए तैयार हो जाओ साबू!

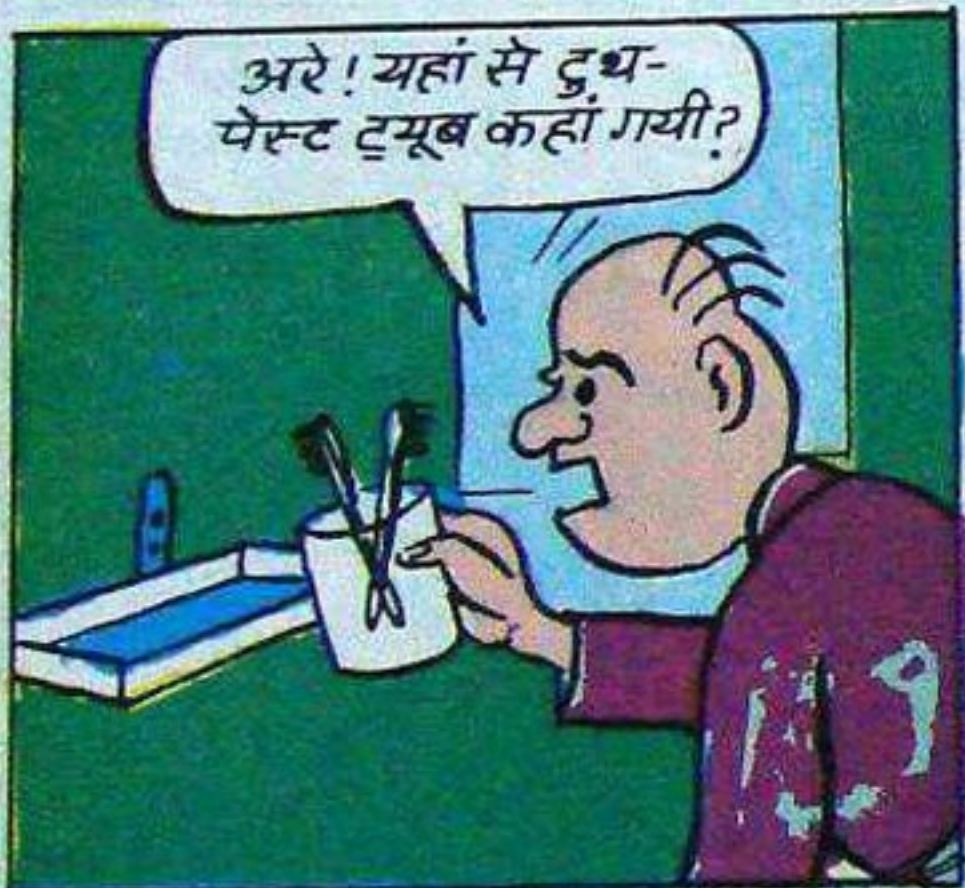


आगे बढ़ते ही साबू ने उसे एक जोरदार पटखनी खिलाई



समूह हमारा जिनम भर गया. भागो यहां से!

भलाई की बुराई पर हमेशा ही जीत होती है.









कमाल राकेट का



चाचाजी, आज दीवाली है. आओ पटाखे चलाएं.

वाह! इतने सारे पटाखे!



दूर हट जाओ यह बम चलने लगा है.



वाह! मजा आ गया.

क्या धमाके की आवाज है!



खोद और धोद दो बदमाश...

खोद, आज दीवाली है लोगों के पास खूब पैसा होगा.



क्यों न किसी भागिशाबाजी वाले को लूटे. रुपये भी आएंगे और चलाने के लिए पटाखे भी मिलेंगे.

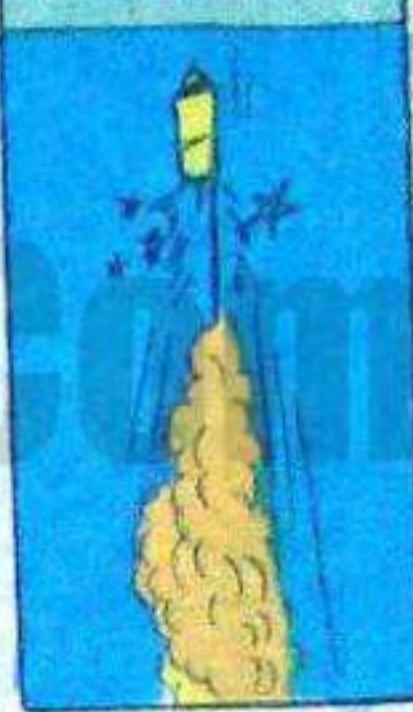
वाह! क्या आईडिया है!



चाचा चौधरी राकेट चला रहे हैं.



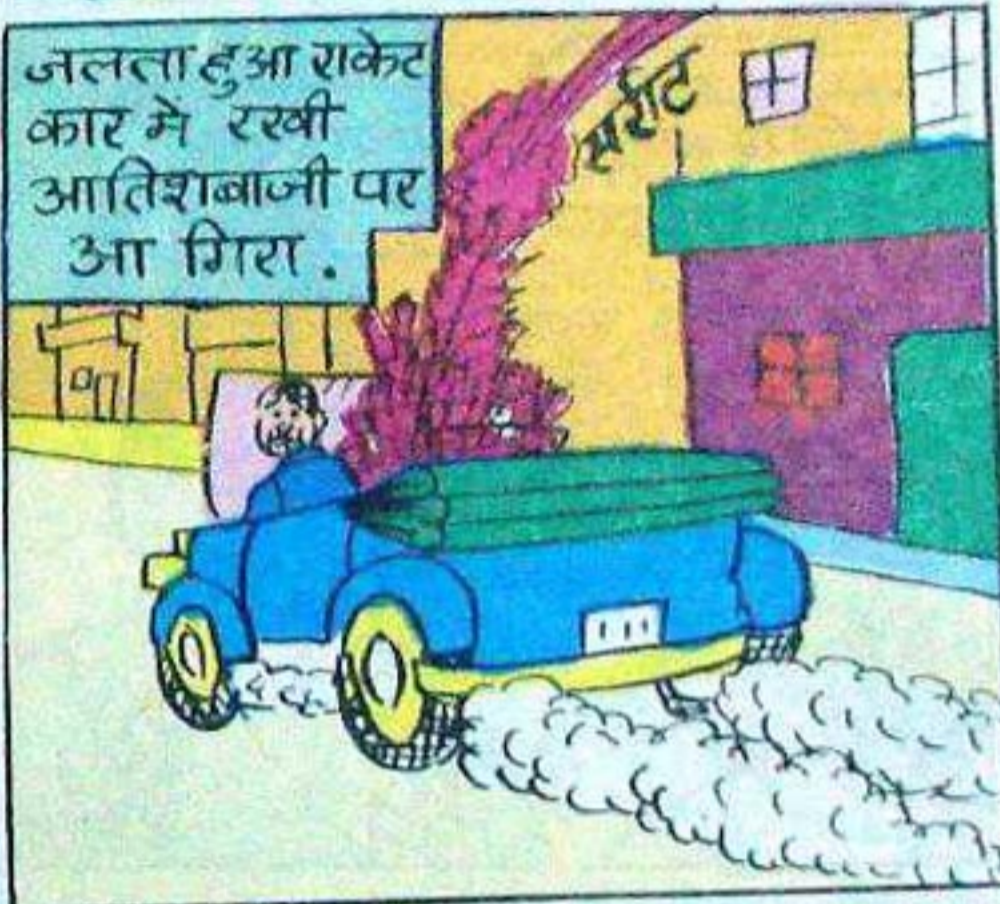
राकेट आसमान
की ओर उठा...



और फिर नीचे...



जलता हुआ राकेट
कार में रखी
आतिशबाजी पर
आ गिरा.



लूटे हुए पत्थर धूटने लगते हैं.



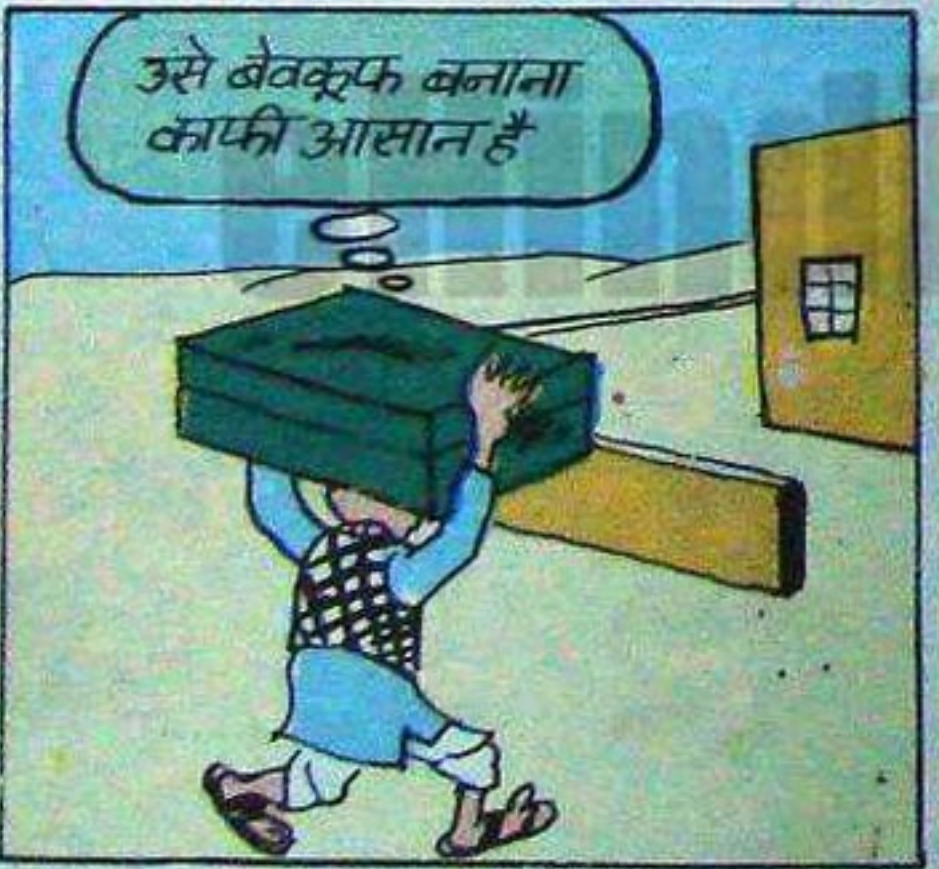
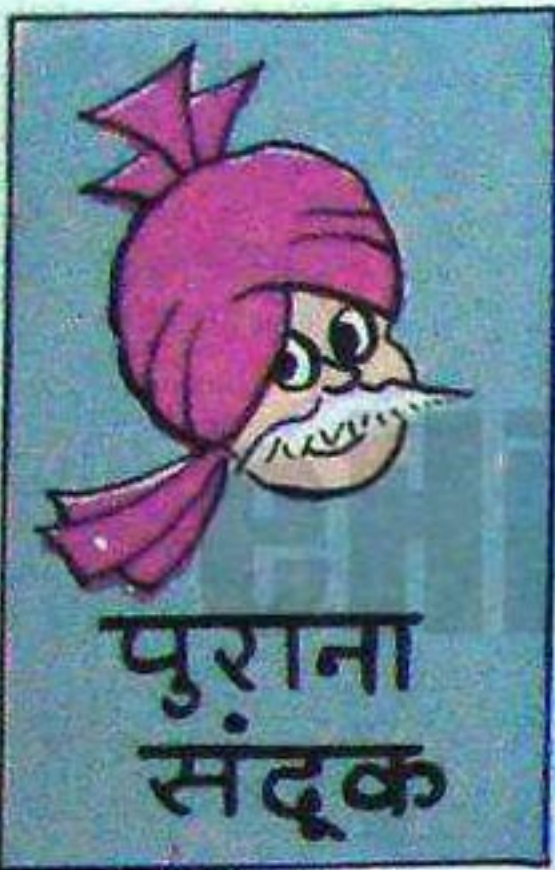
कार एक खम्भे से जा टकराती है.



चोकेलाल, यह तुम्हारी दुकान से
खरीदे हुए राकेट का ही कमाल है
कि तुम्हारी सड़कची मिल
गई.



एक दिन मुरली ने अपना कबाड़ खाना खोला तो ...







कैंको
इसे
बाहर!



अरे! यह पुराना
संदूक!



मिल गया! मुझे
जिसकी तलाश
थी, मिल गया.



मैं इसके एक लाख दे सकता हूँ.

आपकी तारीफ?



एक इतिहासकार हूँ. नेशनल म्यूजियम
के लिये ऐतिहासिक वस्तुएं खरीदता
हूँ. यह संदूक शहशाह अकबर के
महल का है. यह लो एक लाख रुपये.

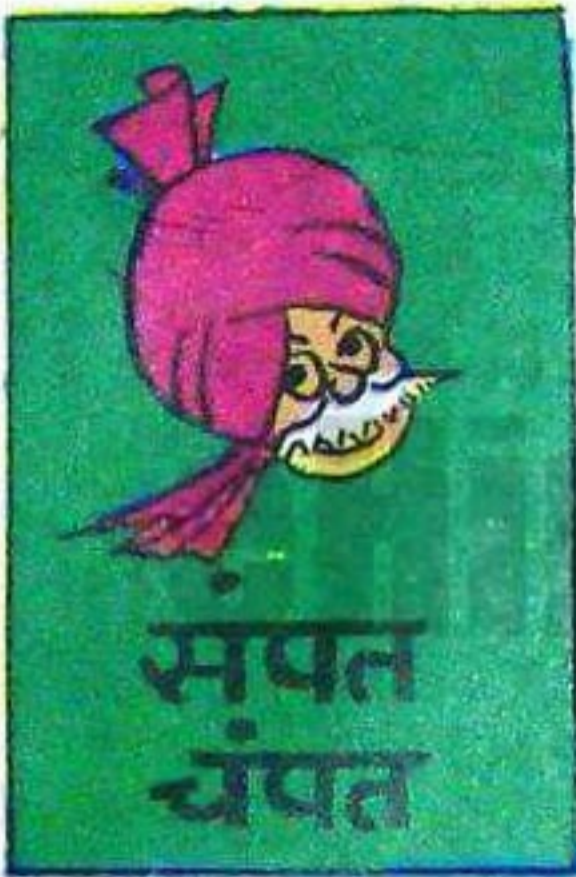


वाह भागवान! चलो इसी
खुशी में तुम्हें साड़ी दिलाऊँ



सचमुच तुम्हारा
संदूक सोना बनाता
है मुरली!

मर गये!







उनके जाने के बाद ...

चाचाजी, मैं रुपये दे दो, शास को डूब सौ लौटा दूंगा.



यह लौ, पर यह लौ बताओ, तुम्हारा नाम क्या है?

संपत.



मुझे इसका पीछा करना चाहिये.



चंपत, मैं आज चाचा चौधरी को ठग कर आ रहा हूँ.



हा-हा! यह कमाई का अच्छा धंधा है.



हू! तो ये हैं चंपत-संपत का राज!

अरे!

मारे गये!



चलो, लौटाओ सब के जैसे!



ये चंपत-संपत जुड़वां भाई हैं. हम शकल होने का फायदा उठा कर लोगों को ठगते फिरते हैं.

चलो अपने रुपये.



चाचा चौधरी कई दिनों तक ज्यूपिटर
पर साबू के साथ रहा. आखिर एक दिन...

साबू, चलो
अब घर चलें.

क्यों चाचाजी?



क्या ज्यूपिटर की जिंदगी
अच्छी नहीं लगी ?

नहीं, बेबत नहीं.
यहां लोगों ने
मेरा जो आदर-
सत्कार किया है,
मैं उसे भूल नहीं
सकता. परंतु
अपना देश आखिर
अपना देश
ही है.



अच्छी बात है. अब
हम वापस चलते हैं.



और राकेट चाचा चौधरी
और साबू को लिए
ज्यूपिटर से चल दिया.



वह तो फुटबॉल
जैसी लग रही है.

साबू, वह देखो,
वह रही
हमारी पृथ्वी.

दूर से पृथ्वी ऐसे

ही दिखाई देता है.





आक्सीजन देने से अंतरिक्ष यात्री होश में आता है।

मैं कहां हूँ ?

घबराओ नहीं, हम तुम्हारे मित्र हैं, तुम अंतरिक्ष में कैसे भटक गए ?

मैं अमरीकन हूँ, मेरा नाम जानसन है, दूसरे साथियों के साथ राकेट द्वारा अंतरिक्ष में आया, मौसम अनुसंधान के लिये राकेट से बाहर निकला, मैं जिस रस्सी से बंधा था, घूमते हुए खुल गई, कुछ देर तो आक्सीजन के सहारे अंतरिक्ष में भटकता रहा, फिर वह भी खत्म हो गई।

मैं कहां हूँ ?

फिक्र मत करो जानसन, हम शीघ्र ही पृथ्वी पर सुरक्षित पहुंच जायेंगे।

पृथ्वी पर.

चाचाजी, आपका यह राकेट जरूरत से कुछ ज्यादा बड़ा है।

वह इसलिए कि सब जैसा आदमी भी इसमें बैठ सके।

अरे, तुम लोग दो गए थे और तीन लौट रहे हो ?

भागवान, तुम नहीं समझ सकोगी।

अब जल्दी से इनके लिए एक कटोरा भर कर लस्सी का, मक्खन डाल कर ले आओ।

बस यूँ समझ लो कि अंतरिक्ष में घूमते हुए वे मिल गए और हम इन्हें साथ ले आए।



कीमती हीरा

चाचा चौधरी और दीपू किसी पहाड़ी शहर में सैर करने आये हैं

चाचाजी आप जरा घूमकर आओ. तब तक मैं इसतरफ टहल कर आता हूँ.



अच्छी बात है.

थोड़ी दूर जाने पर...

अहा, हीरा!
यह जरूर
कीमती हीरा है.



तभी पीछे से एक अजनबी आता है.

यह हीरा मेरे हवाले कर दे दोकरे! नहीं तो मार मार कर भुर्ता बना दूंगा.



इस हीरे को बेचकर मैं लाखों कमाऊंगा.

पर इसे धोड़ा तो शोर मचा कर लोगों को जमा कर लेगा



उग ने दीपू को कोठरी में बंद कर दिया.

अब इसे कोई बाहर नहीं निकाल सकता.



मैं बाजार जाकर हीरे को बेच आता हूँ.





सड़क टेड़ी-
मेढ़ी है. हम उसे जल्दी पकड़ लेंगे.



वह रहा ठग! अब हम
करीब करीब उसके सिर के
ऊपर ही हैं.



तभी ट्राली
की तार
टूट
जाती है.

अरे! यह
क्या?



धड़ाम

हाय!



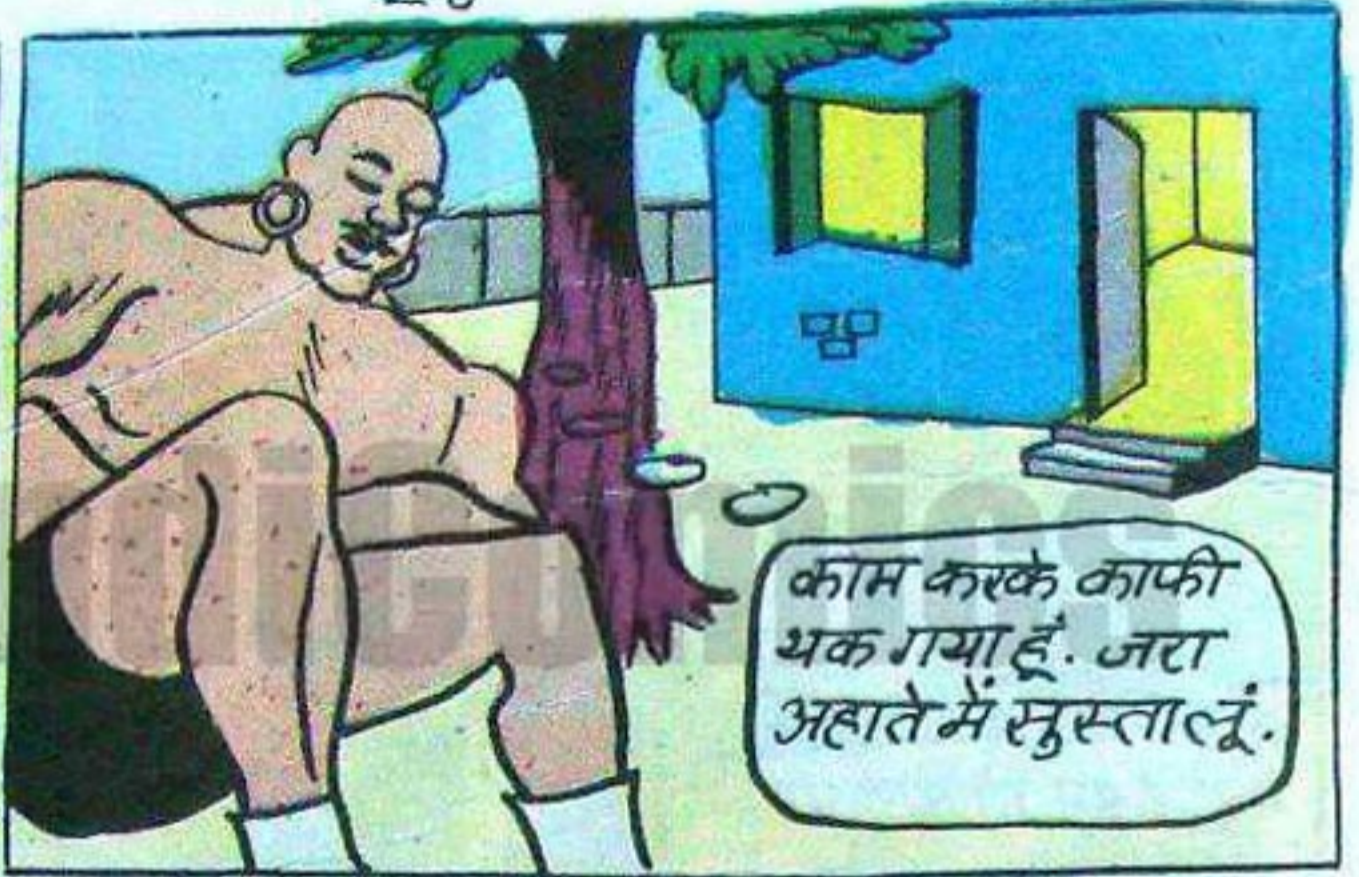
ओह!
मेरे दांत
टूट गये.



यह लो अपना हीरा. अब मैं
कभी बच्चों से चीज नहीं धीनूंगा.



धत्ते का
महत्व



काम करके काफी
थक गया हूँ. जरा
अहाते में सुस्ता लूँ.



ओह!



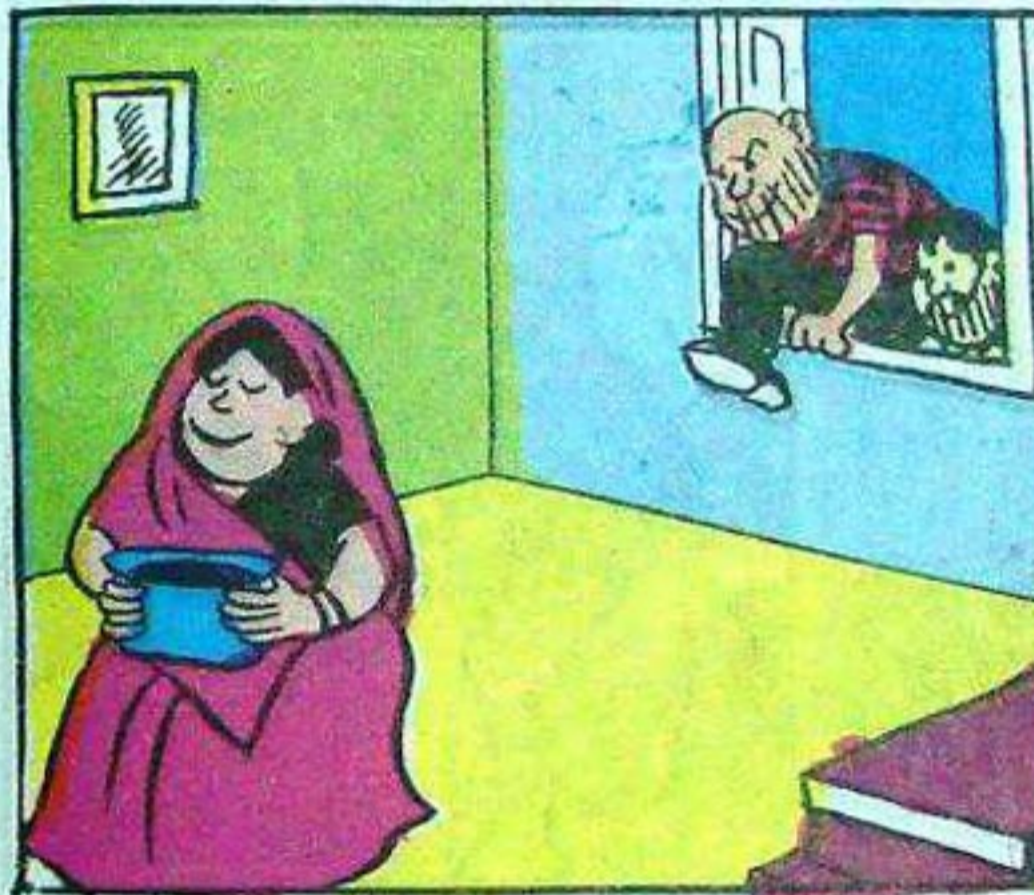
क्या हुआ साबू ?
तेरी चीख सुनकर
मुझे बाहर
आना पड़ा.



मधुमक्खी ने मुझे काट
लिया है. मैं अभी ये धत्ता
उखाड़कर बाहर
फैंक देता हूँ.

पेसान करना. मधुमक्खी के
बड़े फायदे हैं. इसके
धत्ते से हमें शहद
मिलता है जो कई
बीमारियों को
दूर करने
में काम
आता है.







अब जल्दी भाग चलो.



टक्कर

ओह! यह क्या?



बाप रे, मधुमक्खियां!



चाचा चौधरी और साबू लौटते हैं...

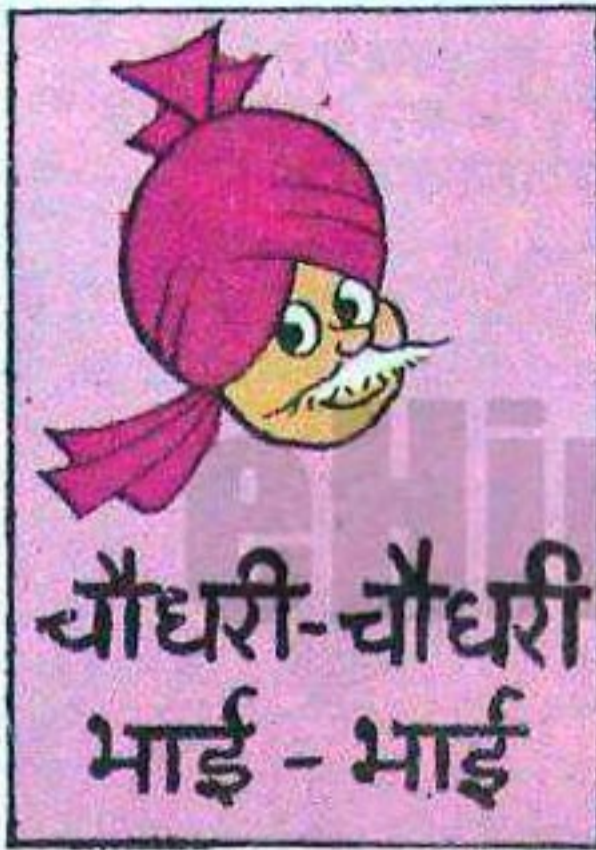
साबू, देखो. टो चोर हमारे घर से भाग रहे हैं.

अच्छा? मैं अभी उनकी खबर लेता हूँ.

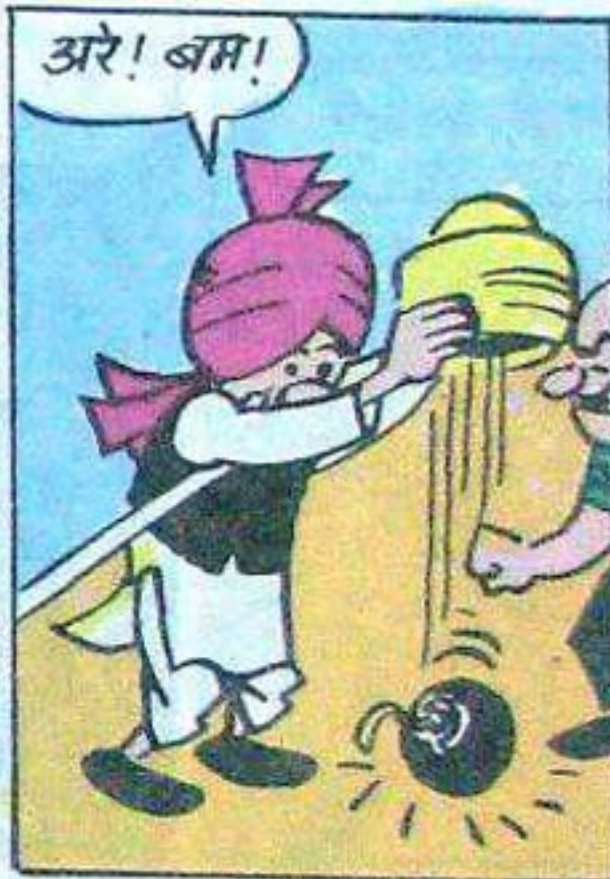


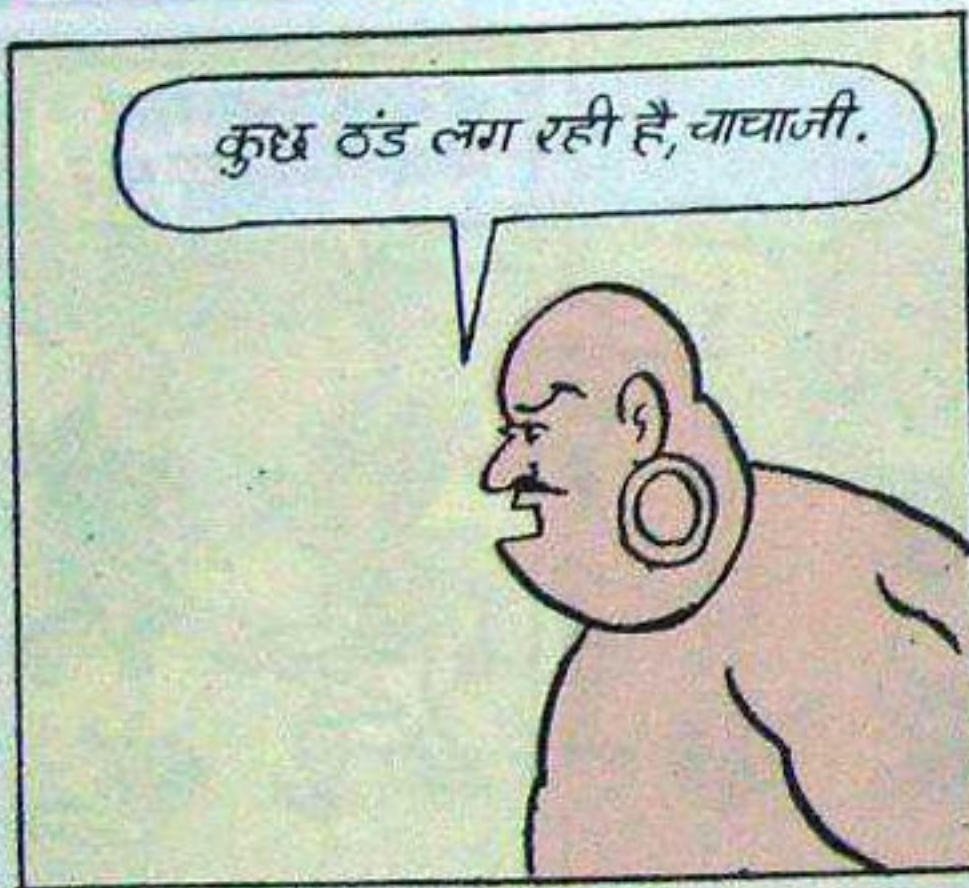
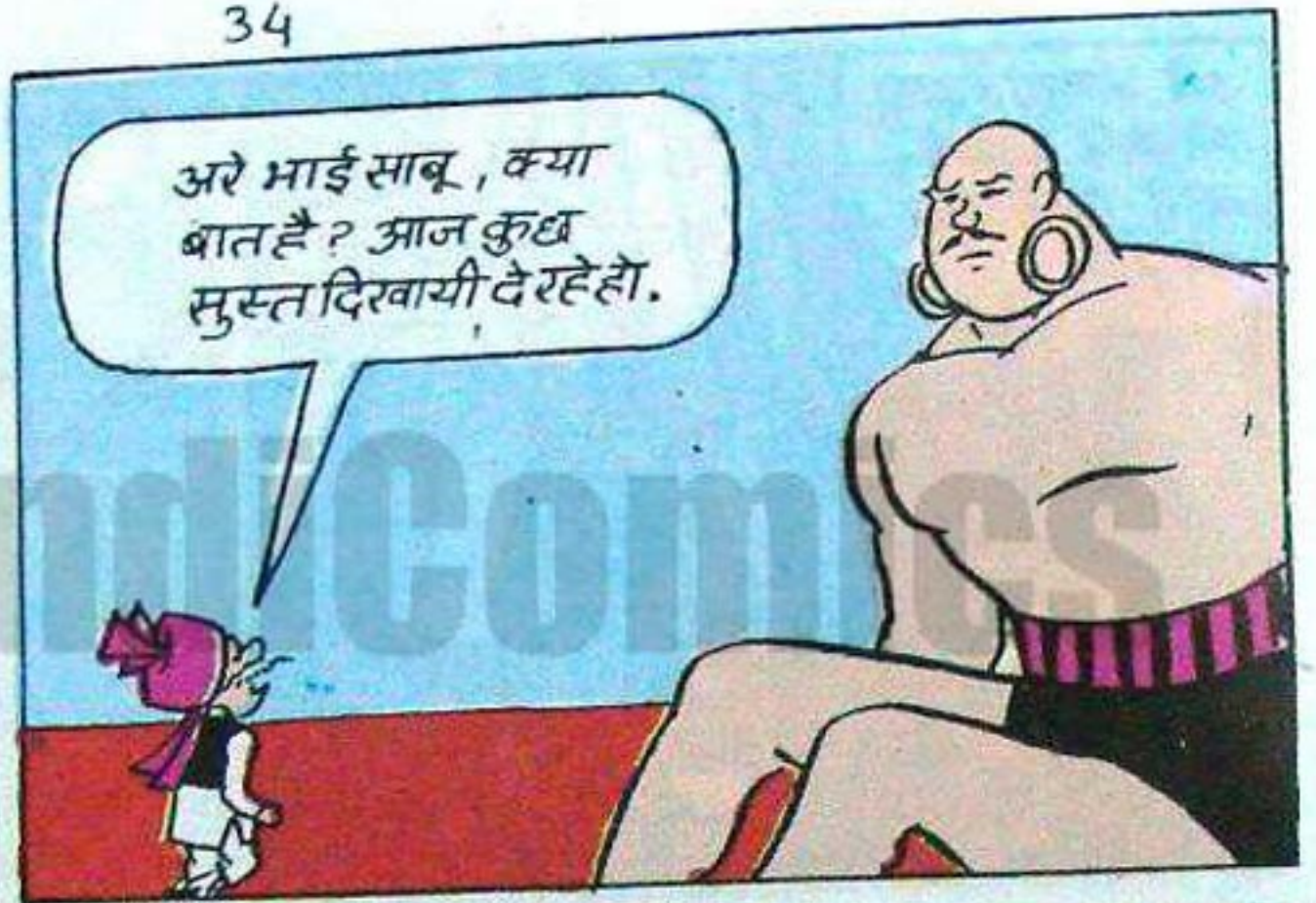
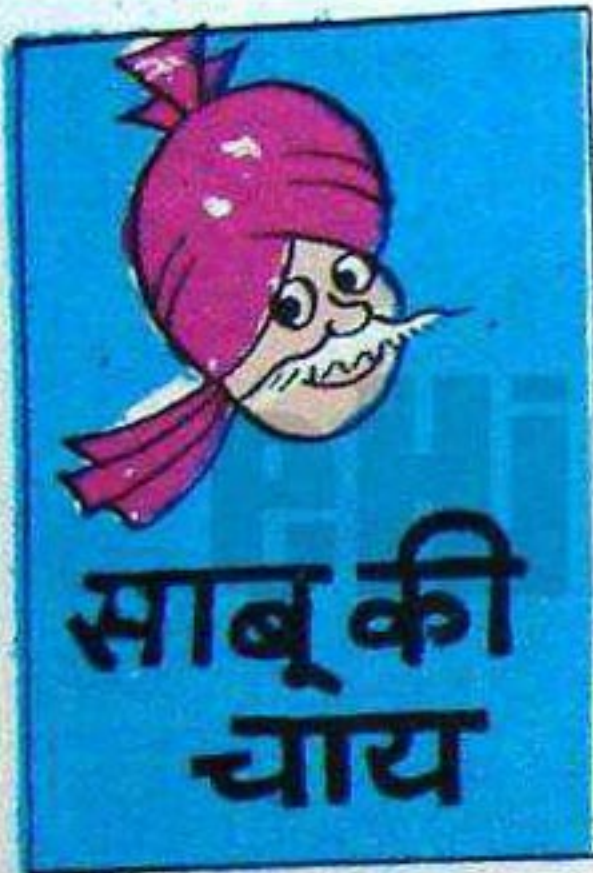
तुम्हारी जरूरत नहीं. मधुमक्खियां ही उनकी खबर ले रही हैं.

हां- हा, यह उनका एक और फायदा है.











जल्दी लाओ भागवान!



हा-हा-हा! मेरे लिये इतने छोटे कप में चाय! कोई बड़ा बर्तन लाओ.

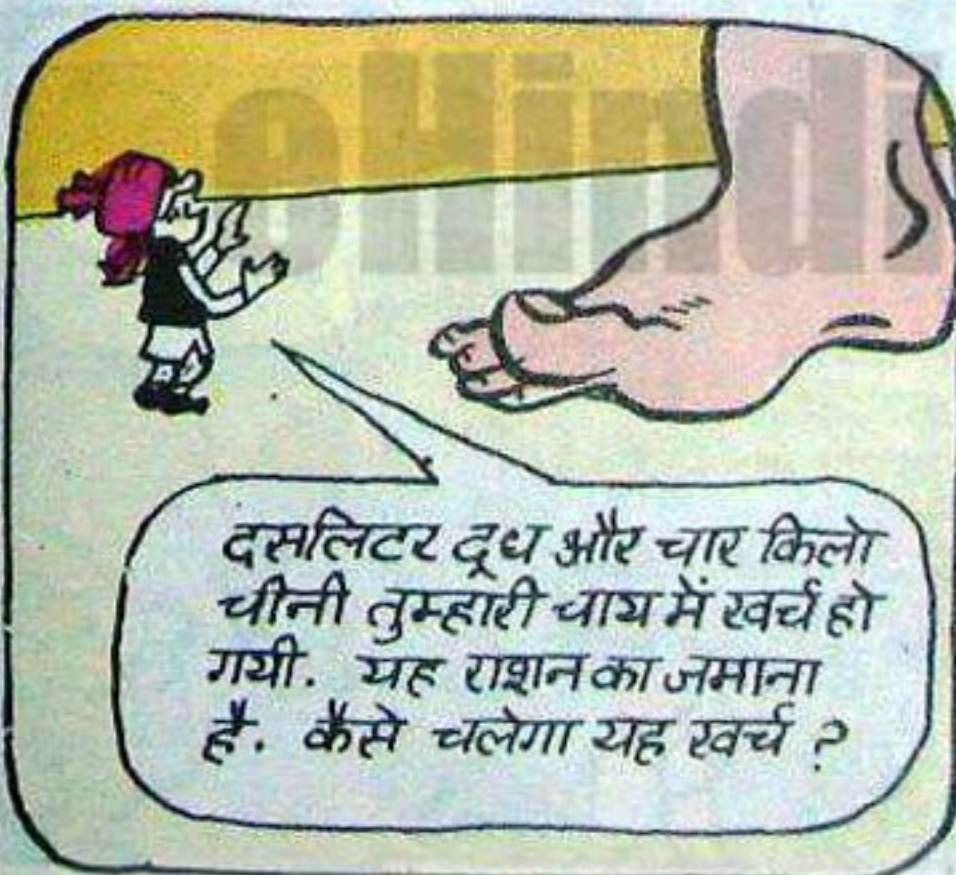


कुछ देर के बाद.

लो! भैंसों को पानी देने वाले टब में लायी हूं. अब तो काफी हैं न?



है तो यह भी छोटा. पर खैर, पी ही लेता हूं.



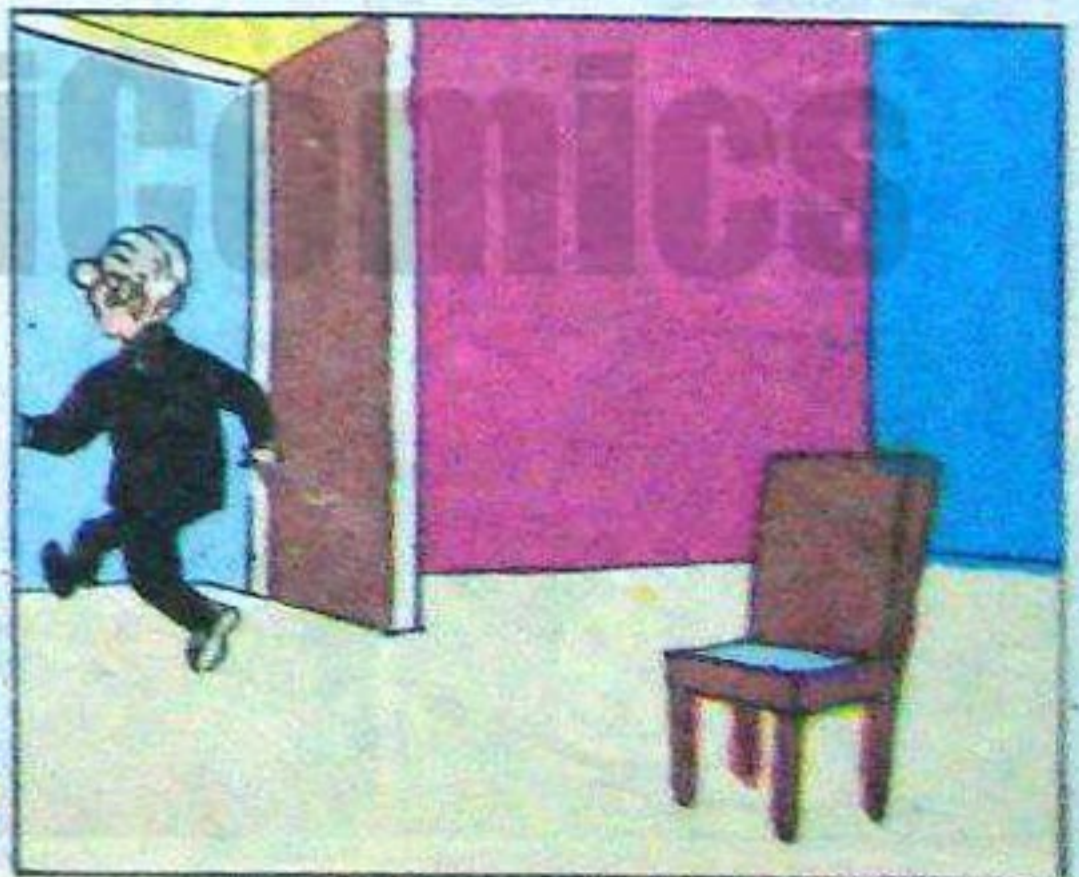
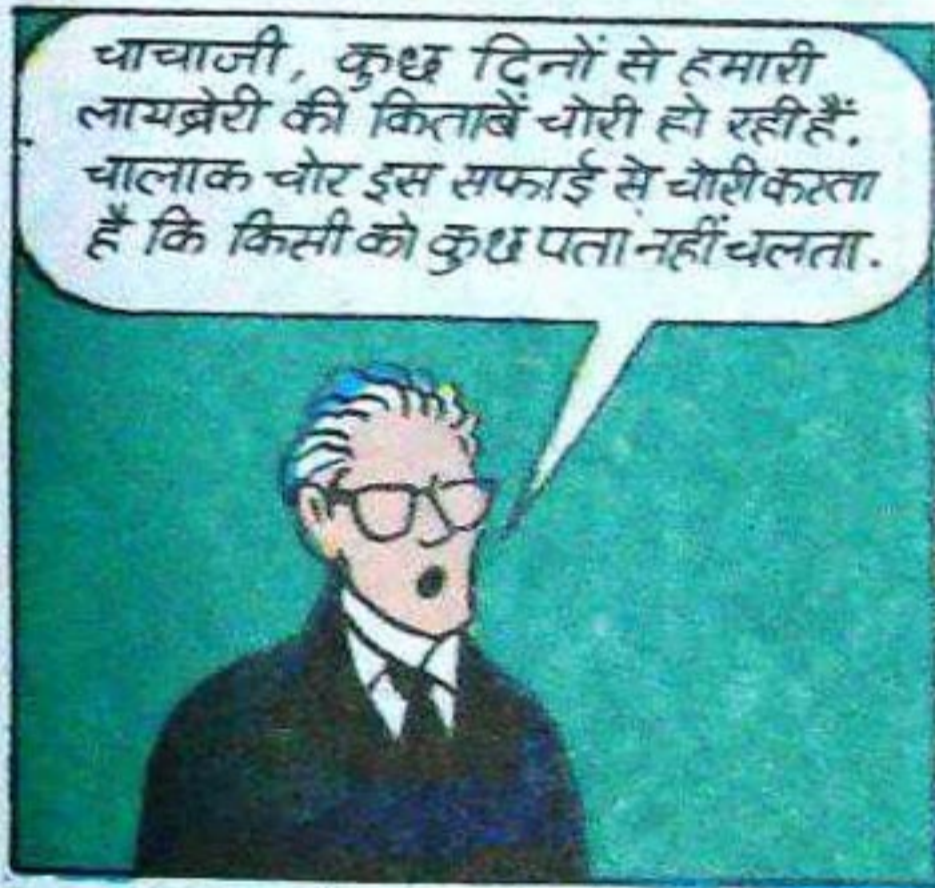
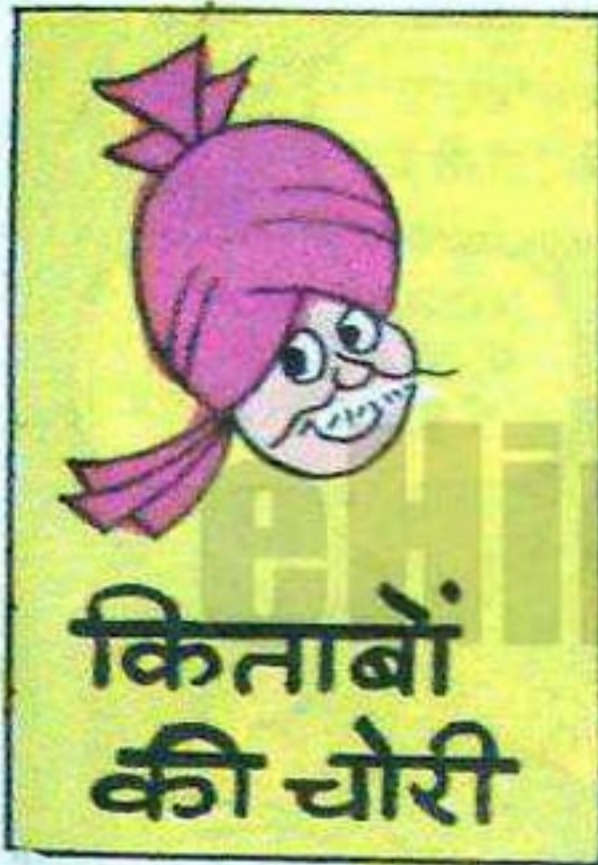
दस लिटर दूध और चार किलो चीनी तुम्हारी चाय में खर्च हो गयी. यह राशन का जमाना है. कैसे चलेगा यह खर्च?

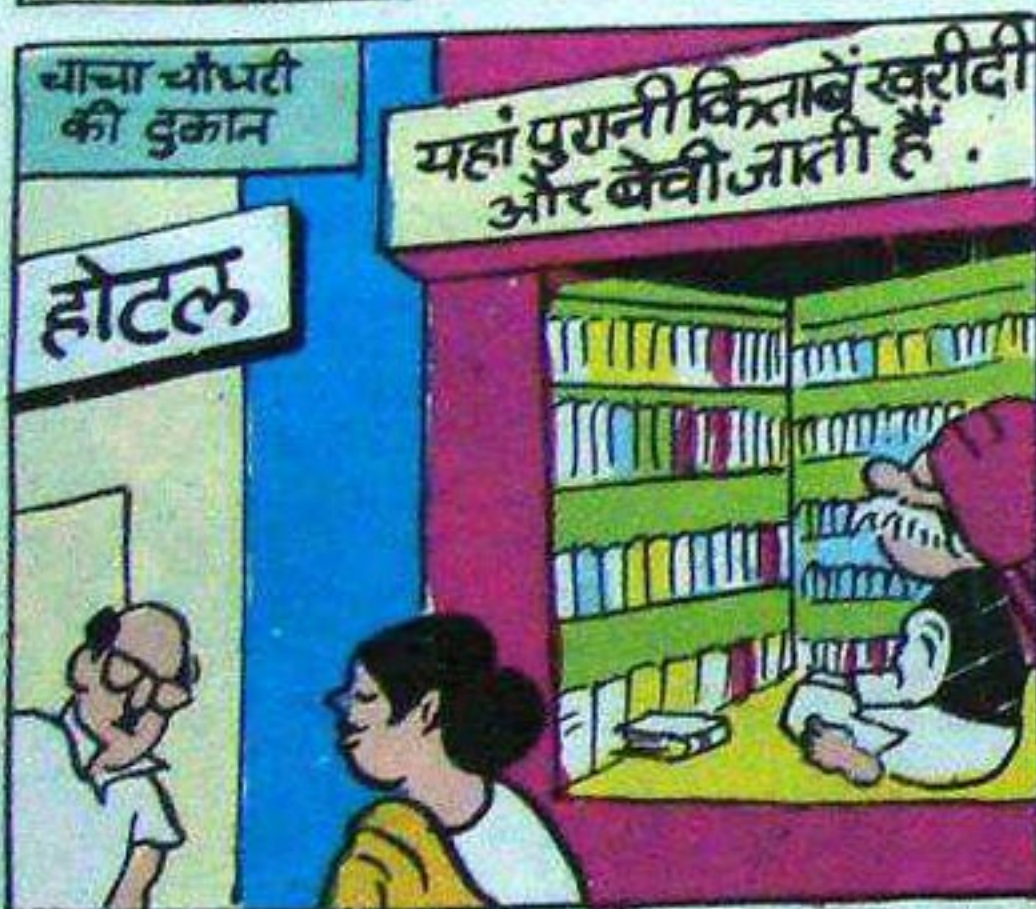


मैं काम करूंगा. मुझे काम दो.

अच्छी बात है.





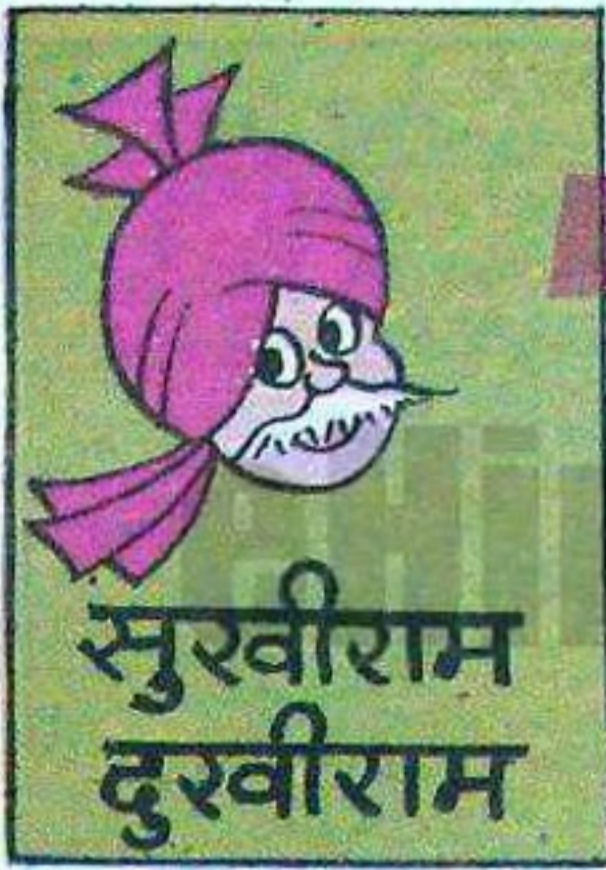














कुंध दूर जाने पर

ॐ ॐ ॐ

अरे, यह किसके रोने की आवाज है?



यह तो कंजूसीराम है.

तुम्हें क्या तकलीफ है? नोटों के ढेर पर बैठे रहते हो तुम.



यही दौलत तो मेरे दुख का कारण है. दिन-रात नोटों के ढेर पर बैठा रहता हूं कि कहीं इसे चोर न चुरा लें.

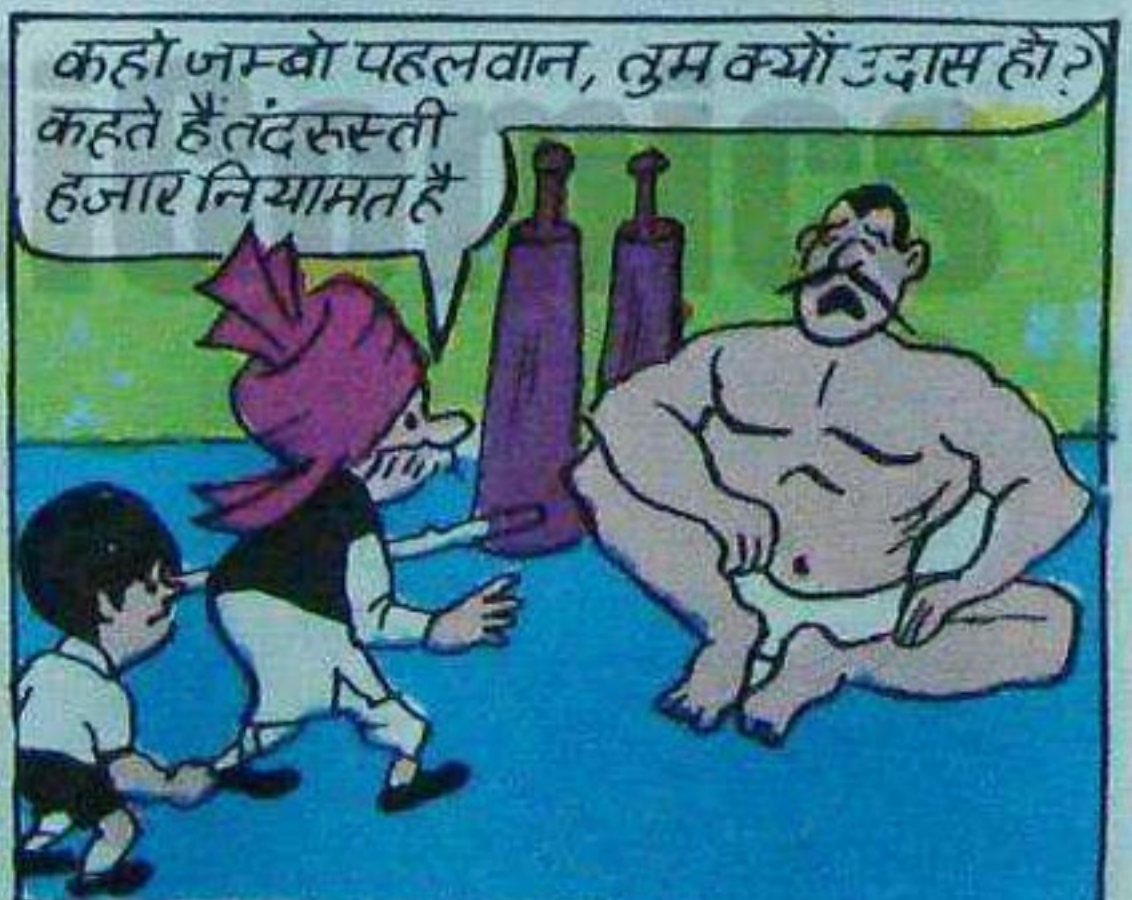


इन्हें बैंक में जमा करा दो.

न-न! यह काले धन की कमाई है. वहां से चोर न सही इंकम टैक्स वाले ले जायेंगे



देखा! इतनी दौलत होते हुये भी कंजूसीराम खुश नहीं हैं.



कहो जम्बो पहलवान, तुम क्यों उदास हो? कहते हैं तंदरुस्ती हजार नियामत है

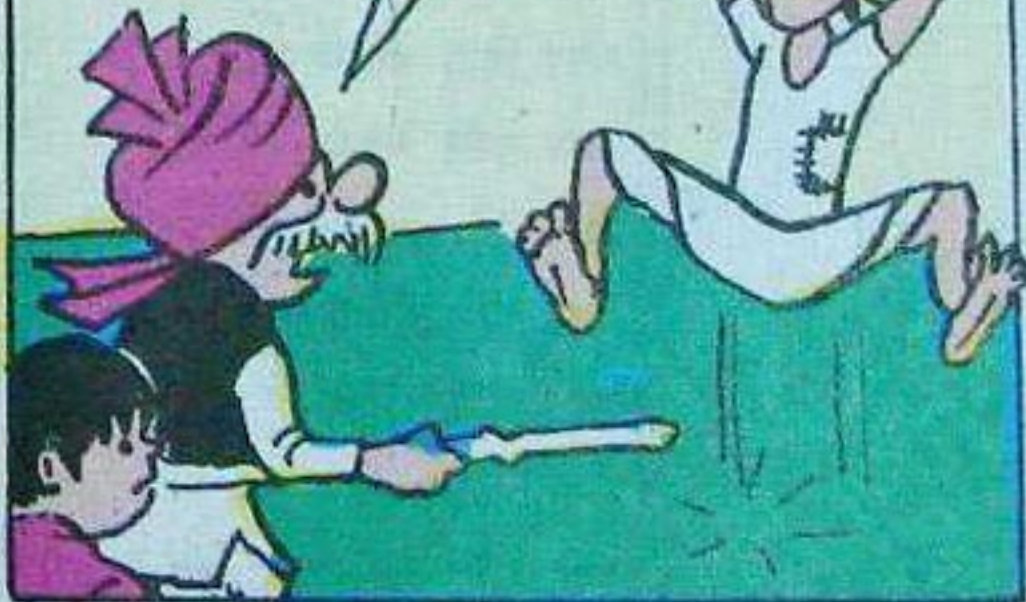
महंगाई बढ़ती जा रही है और खुराक घटती जा रही है. यही हाल रहा तो एक दिन कुछ भी नहीं मिलेगा और मैं दुबला हो जाऊंगा.



देखा! यह हट्टा-कट्टा पहलवान भी खुश नहीं. आओ अब और आगे बढ़ें.



मौजीराम, क्यों उधल रहे हो? लाटरी निकल आयी क्या?



अजी कहां? लाटरी का टिकट खरीदने लायक पैसे मेरे पास कहां? रोज इतना कमाता हूं कि कूखी-सूखी मिल जाये और लम्बी तान कर सो सकूं, बस.



तो तुम्हारी खुशी का रहस्य?



सूखी रोटी हलवा-पूड़ी समझकर खाता हूं, मस्ती से दिन गुजारता हूँ.



देखा! मौजीराम मन से सुखी है.